



पुना International School

Shree Swaminarayan Gurukul, Zundal



p - wag - pa# - 0 - mnÿta



”

नर हो, न निराश करो मन को
कुछ काम करो, कुछ काम करो
जग में रह कर कुछ नाम करो
यह जन्म हुआ किस अर्थ अहो
समझो जिसमें यह व्यर्थ न हो
कुछ तो उपयुक्त करो तन को
नर हो, न निराश करो मन को।
संभलो कि सुयोग न जाय चला
कब व्यर्थ हुआ सदुपाय भला
समझो जग को न निरा सपना
पथ आप प्रशस्त करो अपना
अखिलेश्वर है अवलंबन को
नर हो, न निराश करो मन को।

— ” —

मैथिलीशरण गुप्त



मैथिलीशरण गुप्त

(1886-1964)

1886 में झाँसी के करीब चिरगाँव में जन्मे मैथिलीशरण गुप्त अपने जीवनकाल में ही राष्ट्रकवि के रूप में विख्यात हुए। इनकी शिक्षा-दीक्षा घर पर ही हुई। संस्कृत, बांग्ला, मराठी और अंग्रेजी पर इनका समान अधिकार था।

गुप्त जी रामभक्त कवि हैं। राम का कीर्तिगान इनकी चिरसंचित अभिलाषा रही। इन्होंने भारतीय जीवन को समग्रता में समझने और प्रस्तुत करने का भी प्रयास किया।

गुप्त जी की कविता की भाषा विशुद्ध खड़ी बोली है। भाषा पर संस्कृत का प्रभाव है। काव्य की कथावस्तु भारतीय इतिहास के ऐसे अंशों से ली गई है जो भारत के अतीत का स्वर्ण चित्र पाठक के सामने उपस्थित करते हैं।

गुप्त जी की प्रमुख कृतियाँ हैं— साकेत, यशोधरा, जयद्रथ वध।

गुप्त जी के पिता सेठ रामचरण दास भी कवि थे और इनके छोटे भाई सियारामशरण गुप्त भी प्रसिद्ध कवि हुए।

'मनुष्यता' कविता में कवि मैथिलीशरण गुप्त मनुष्य को मनुष्यता का भाव अपनाने के लिए कहते हैं। उनके अनुसार आज का मनुष्य अपने स्वार्थों की पूर्ति हेतु लोकहित जैसी भावना को भूलता जा रहा है। जो मनुष्य अपने लिए जीता है, वह पृथ्वी में पशु के समान है। क्योंकि पशु के जीवन का उद्देश्य खाना और सोना होता है। भगवान ने मनुष्य को सामर्थ्यवान बनाया है। मनुष्य दूसरों की सेवा करने के स्थान पर पूरा जीवन स्वयं का भरण-पोषण करने में व्यर्थ करता है, तो वह मनुष्य कहलाने लायक नहीं है। कवि कर्ण, दधीचि ऋषि, रंतिदेव, राजा उशीनर आदि महानुभूतियों का उदाहरण देकर मनुष्य को लोकहित के लिए प्रेरित करते हैं। वह कहते हैं, जो मनुष्य इस संसार में दूसरों की सेवाभाव में अपना जीवन समर्पित करते हैं, वे इस संसार के द्वारा ही नहीं अपितु भगवान के द्वारा भी पूज्यनीय होते हैं। वह अपने कार्यों से समाज में अन्य लोगों को लोकहित और सेवा का मार्ग दिखाते हुए चलते हैं। ऐसे व्यक्ति समाज में मिसाल कायम करते हैं। युगों-युगों तक उनकी गाथा गायी जाती है। अतः मनुष्य को अपने गुणों का विकास करते हुए, पूरा जीवन लोकहित में अर्पण कर देना चाहिए।

pXn-]Ttr:-

1. कवि ने कैसी मृत्यु को सुमृत्यु कहा है?
- 1-कवि ने ऐसी मृत्यु को सुमृत्यु कहा है जो मानवता की राह में परोपकार करते हुए आती है जिसके बाद मनुष्य को मरने के बाद भी याद रखा जाता है।
- 2-उदार व्यक्ति की पहचान कैसे हो सकती है?
- 2-उदार व्यक्ति परोपकारी होता है। अपना परा जीवन पण्य व लोकहित कार्यों में बिता देता है। किसी से भेदभाव नहीं रखता, औत्मीय भाव रखता है। कवि और लेखक भी उसके गुणों की चर्चा अपने लेखों में करते हैं। वह निज स्वार्थों का त्याग कर जीवन का मोह भी नहीं रखता।
- 3-कवि ने दधीचि कर्ण, आदि महान व्यक्तियों का उदाहरण देकर मनुष्यता के लिए क्या संदेश दिया है?
- 3-कवि ने दधीचि कर्ण आदि महान व्यक्तियों के उदाहरण देकर 'मनुष्यता'के लिए यह संदेश दिया है कि परोपकार के लिए अपना सर्वस्व यहाँ तक कि अपने प्राण तक न्योछावर तक करने को तैयार रहना चाहिए। यहाँ तक कि परहित के लिए अपने शरीर तक का दान करने को तैयार रहना चाहिए। दधीचि ने मानवता की रक्षा के लिए अपनी अस्थियाँ तथा कर्ण ने खाल तक दान कर दी। हमारा शरीर तो नश्वर है उसका मोह रखना व्यर्थ है। परोपकार करना ही सच्ची मनुष्यता है। हमें यही करना चाहिए।
- 4-कवि ने किन पंक्तियों में यह व्यक्त है कि हमें गर्व रहित जीवन व्यतीत करना चाहिए?
- 4-निम्नलिखित पंक्तियों में गर्व रहित जीवन व्यतीत करने की बात कही गई है-
रहो न भूल के कभी मदांध तच्छ वित्त में।
सनाथ जीन आपको करो न गर्व चित्त में॥

5-'मनुष्य मात्र बंधु है' से आप क्या समझते हैं? स्पष्ट कीजिए।

5-मनुष्य मात्र बंधु है से तात्पर्य है कि सभी मनुष्य आपस में भाई बंधु हैं क्योंकि सभी का पिता एक ईश्वर है। इसलिए सभी को प्रेम भाव से रहना चाहिए, सहायता करनी चाहिए। कोई पराया नहीं है। सभी एक दूसरे के काम आएँ।

6- कवि ने सबको एक होकर चलने की प्रेरणा क्यों दी है?

6-कवि ने सबको एक साथ चलने की प्रेरणा इसलिए दी है क्योंकि सभी मनुष्य उस एक ही परमपिता परमेश्वर की संतान हैं इसलिए बंधुत्व के नाते हमें सभी को साथ लेकर चलना चाहिए क्योंकि समर्थ भाव भी यही है कि हम सबका कल्याण करते हुए अपना कल्याण करें।

7- व्यक्ति को किस प्रकार का जीवन व्यतीत करना चाहिए? इस कविता के आधार पर लिखिए।

7-व्यक्ति को परोपकार का जीवन व्यतीत करना चाहिए। साथ ही अपने अभीष्ट मार्ग पर एकता के साथ बढ़ना चाहिए। इस दौरान जो भी विपत्तियाँ आएँ, उन्हें ढकेलते हुए आगे बढ़ते जाना चाहिए। उदार हृदय बनकर अहंकार रहित मानवतावादी जीवन व्यतीत करना चाहिए।

8-'मनुष्यता' कविता के माध्यम से कवि क्या संदेश देना चाहता है?

8-'मनुष्यता' कविता के माध्यम से कवि यह संदेश देना चाहता है कि हमें अपना जीवन परोपकार में व्यतीत करना चाहिए। सच्चा मनुष्य दूसरों की भलाई के काम को सर्वोपरि मानता है। हमें मनुष्य मनुष्य के बीच कोई अंतर नहीं करना चाहिए। हमें उदार हृदय बनना चाहिए। हमें धन के मद में अंधा नहीं बनना चाहिए। मानवतावाद को अपनाना चाहिए।

• निम्नलिखित का भाव स्पष्ट कीजिए।

- 1. सहानुभूति चाहिए, महाविभूति है यही वशीकृता सदैव है बनी हुई स्वयं मही। विरुद्धवाद बुद्ध का दया-प्रवाह में बहा, विनीत लोकवर्ग क्या न सामने झुका रहा?
- इन पंक्तियों द्वारा कवि ने एक दूसरे के प्रति सहानुभूति की भावना को उभारा है। इससे बढ़कर कोई पूँजी नहीं है। यदि प्रेम, सहानुभूति, करुणा के भाव हो तो वह जग को जीत सकता है। वह सम्मानित भी रहता है। महात्मा बुद्ध के विचारों का भी विरोध हुआ था परन्तु जब बुद्ध ने अपनी करुणा, प्रेम व दया का प्रवाह किया तो उनके सामने सब नतमस्तक हो गए।
- 2. रहो न भूल के कभी मदांध तुच्छ चित्त में, सनाथ जान आपको करो न गर्व चित्त में। अनाथ कौन है यहाँ? त्रिलोकनाथ साथ हैं, दयालु दीनबंधु के बड़े विशाल हाथ हैं।
- कवि कहता है कि कभी भूलकर भी अपने थोड़े से धन के अहंकार में अंधे होकर स्वयं को सनाथ अर्थात् सक्षम मानकर गर्व मत करो क्योंकि अनाथ तो कोई नहीं है। इस संसार का स्वामी ईश्वर तो सबके साथ है और ईश्वर तो बहुत दयालु, दीनों और असहायों का सहारा है और उनके हाथ बहुत विशाल है अर्थात् वह सबकी सहायता करने में सक्षम है। प्रभु के रहते भी जो व्याकुल रहता है वह बहुत ही भाग्यहीन है। सच्चा मनुष्य वह है जो मनुष्य के लिए मरता है।

- 3. चलो अभीष्ट मार्ग में सहर्ष खेलते हुए, विपत्ति, विघ्न जो पड़ें उन्हें ढकेलते हुए। घटे न हेलमेल हों, बड़े न भिन्नता कभी, अतर्क एक पंथ के सतर्क पंथ हों सभी।
- कवि कहता है कि अपने इच्छित मार्ग पर प्रसन्नतापूर्वक हंसते खेलते चलो और रास्ते पर जो कठिनाई या बाधा पड़े उन्हें ढकेलते हुए आगे बढ़ जाओ। परंतु यह ध्यान रखना चाहिए कि हमारा आपसी सामंजस्य न घटे और हमारे बीच भेदभाव न बढ़े। हम तर्क रहित होकर एक मार्ग पर सावधानीपूर्वक चलें। एक दूसरे को तारते हुए अर्थात् उद्धार करते हुए आगे बढ़े तभी हमारी समर्थता सिद्ध होगी अर्थात् हम तभी समर्थ माने जाएंगे जब हम केवल अपनी ही नहीं समस्त समाज की भी उन्नति करेंगे। सच्चा मनुष्य वही है जो दूसरों के लिए मरता है।

• Vyākṛ̣ṇ :-

पदबंध:- परिभाषा

पद- वाक्य से अलग रहने पर 'शब्द' और वाक्य में प्रयुक्त हो जाने पर शब्द 'पद' कहलाते हैं। दूसरे शब्दों में- वाक्य में प्रयुक्त शब्द पद कहलाता है। **पदबंध-** जब दो या अधिक (शब्द) पद नियत क्रम और निश्चित अर्थ में किसी पद का कार्य करते हैं तो उन्हें **पदबंध** कहते हैं।

पदबंध के भेद

मुख्य पद के आधार पर पदबंध के पाँच प्रकार होते हैं-

- | | |
|-------------------|------------------|
| (1) संज्ञा-पदबंध | (2) विशेषण-पदबंध |
| (3) सर्वनाम पदबंध | (4) क्रिया पदबंध |
| (5) अव्यय पदबंध | |

(1) संज्ञा-पदबंध-

- चार ताकतवर मजदूर इस भारी चीज को उठा पाए।
- राम ने लंका के राजा रावण को मार गिराया।
- अयोध्या के राजा दशरथ के चार पुत्र थे।
- आसमान में उड़ता गुब्बारा फट गया।

2) विशेषण पदबंध-

- तेज चलने वाली गाड़ियाँ प्रायः देर से पहुँचती हैं।
- उस घर के कोने में बैठा हुआ आदमी जासूस है।
- उसका घोडा अत्यंत संदर, फरतीला और आज्ञाकारी है।

3) सर्वनाम पदबंध-

- (a) बिजली-सी फुरती दिखाकर आपने बालक को डूबने से बचा लिया।
- (b) शरारत करने वाले छात्रों में से कुछ पकड़े गए।
- (c) विरोध करने वाले लोगों में से कोई नहीं बोला।

4) क्रिया पदबंध-

- (a) वह बाजार की ओर आया होगा।
- (b) मुझे मोहन छत से दिखाई दे रहा है।
- (c) सुरेश नदी में डूब गया।
- (d) अब दरवाजा खोला जा सकता है।

5) अव्यय पदबंध-

- (a) अपने सामान के साथ वह चला गया।
- (b) सुबह से शाम तक वह बैठा रहा।

- अव्यय -

किसी भी भाषा के वे शब्द अव्यय कहलाते हैं जिनके रूप में लिंग, वचन, पुरुष, कारक, काल इत्यादि के कारण कोई विकार उत्पन्न नहीं होता। ऐसे शब्द हर स्थिति में अपने मूलरूप में बने रहते हैं।

उदाहरण:

हिन्दी के अव्यय : जब, तब, अभी, उधर, वहाँ, इधर,
कब, इत्यादि।

संस्कृत के अव्यय: अद्य (आज), कुतः (कहाँ से),
किम् (कहा) आदि।